पाठ - 4 आह्वान

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

प्रस्तावना

संसार में जो भी **उपलब्धियाँ** हैं, उन सबके पीछे एक ही चीज दिखाई देती है, वह है–पुरूषार्थ, परिश्रम, मेहनत। आज कृषि, चिकित्सा–विज्ञान आदि के क्षेत्र में जो प्रगति हुई है, वह पुरूषार्थ के बिना भला कैसे संभव हो सकती थी। क्या आलसी व्यक्ति यह सब कर सकते थे? आप दसवीं कक्षा पास करना चाहते हैं। क्या आपके आलस्य से काम बन पाएगा? मात्र भाग्य के भरोसे बैठे रहना, परिश्रम न करना, न तो बुद्धिमत्ता है और न ही सफलता पाने का जरिया। भाग्यवाद तो व्यक्ति को आलसी बना देता है। यह प्रगति का शत्रु होता है। तुलसीदास जी ने यही कहा है–

''सकल पदारथ एहि जग माहीं।
करमहीन नर पावत नाहीं।।''

तो आलस्य छोड़ो, कर्महीनता त्यागो।
प्रस्तुत कविता का स्वर भी ऐसा ही है।

बैठे हुए हो व्यर्थ क्यों? आगे बढ़ो, उँचे चढ़ो!

है भाग्य की क्या भावना, अब पाठ पौरूष का पढ़ो!

है सामने का ग्रास भी मुख में स्वयं जाता **नहीं**,

हाँ! ध्यान उद्यम का तुम्हें तो भी कभी आता नहीं।।

जो लोग पीछे थे तुम्हारे, बढ़ गए है बढ़ रहे,

पीछे पड़े तुम, दैव के सिर दोष अपना मढ़ रहे!

पर कर्म–तैल बिना कभी विधि दीप जल सकता नहीं,

है दैव क्या? **साँचे** बिना कुछ आप ढल सकता नहीं।।

आओ मिल सब देश–बांधव हार बनकर देश के,

साधक बनें सब प्रेम से सुख–शांतिमय उद्देश्य के।

क्या सांप्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता अहो!

बनती नहीं क्या एक माला विविधा सुमनों की कहें?

व्याख्या

1. बैठे हुए हो.....कभी आता नहीं।।

सन्दभः–प्रस्तुत काव्यांश **हमारी हिंदी की** पाठ्यपुस्तक **की कविता** 'आह्वान' से लिया गया है। **इसक** कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं।

प्रसंगः–इन **पंक्तियों** के माध्यम से कवि देशवासियों से आलस्य का त्याग करने का आह्वान कर रहा है।

व्याख्याः–कवि **कहते हैं कि** हे भारतवासियो! निरर्थक अर्थात् बेकार क्यों बैठे हो? अगर अपने दुखों से मुक्ति पाना चाहते हो तो उठो और सफलता की चोटी छूने के लिए चल पड़ो। सफलता पाने अर्थात् जीवन में कुछ सार्थक या अच्छा काम करने के लिए चलना ही पड़ता है, परिश्रम करना ही पड़ता है। अब भाग्य के बदलने या **परिस्थितियाँ** सुधरने की प्रतीक्षा में बैठे रहना छोड़ो। केवल कर्म या पुरूषार्थ के मार्ग पर चलो क्योंकि **परिस्थितियाँ** अपने आप नहीं बदलती, उन्हें मनुष्य अपने उद्यम से बदलता है। भारतीयों के मन में फैली हुई निराशा और आलसीपन को देखकर कवि को दुख होता है।

विशेषः–इस काव्यांश **की भाषा सरल एवं सुबोध है |**

कवि कह**ते हैं कि हमें भाग्य के भरोसे न बैठकर निरंतर कर्म करते रहना चाहिए |**

2. जो लोग पीछे.....सकता नहीं।।

सन्दर्भ :–प्रस्तुत काव्यांश हमारो पाठ्यपुस्तक हिन्दी **की कविता** 'आह्वान' से लिया गया है। **इसके** कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं।

प्रसंग :–इस काव्यांश में कवि भारतवासियों को कर्म का पाठ पढ़ाने का प्रयास कर रहे है।

व्याख्या :–कवि कहता है कि वे लोग आगे बढ़ रहे हैं और हम शासकों के दमन से भयभीत, हताश और निराश होकर भाग्य के भरोसे बैठे है। बदलते हुए समय के अनुसार अपने को बदलने के लिए परिश्रम नहीं करते और अपनी हर असफलता के लिए भाग्य को दोषी मानते है। एक कहावत में कही गई बात

बिल्कुल सत्य है– 'दैव–दैव आलसी पुकारा'' अर्थात आलसी **लोग** कर्म नहीं करते और विपत्ति आने पर केवल भाग्य को दोष देते हैं। ऐसे लोग नहीं जानते कि कर्म रूपी तेल के बिना भाग्य रूपी दीपक नहीं जल सकता।

विशेषः– इस काव्यांश की भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रूचिपूर्ण है |

यहाँ कर्म और परिश्रम के महत्व को दीपक और तेल के माध्यम से समझाया गया हैं।

3. आओ, मिलें.....सुमनों की कहो?

सन्दर्भः–प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **हिंदी की कविता** 'आह्वान' से लिया गया है। जिसके कवि मैथिलीशरण गुप्त **हैं**।

प्रसंगः–कवि देशवासियों से एकजुट होकर कार्य करने का आह्वान कर रहा हैं।

व्याख्याः–कवि कहता है– देशवासियो! माना कि हम अलग–अलग जातियों व संप्रदायों से जुड़े हुए **हैं**,पर भारत के नागरिक होने के नाते हम सब भाई–भाई **हैं**। इसलिए आओ सब मिलकर देश को एकता के सूत्र में बाँधें और सुख–शांतिमय उद्देश्य को पूरा करने के लिए काम करें। सुख कैसे मिलेगा? आजादी से। शांति कैसे मिलेगी? गरीबी दूर होने से। गरीबी दूर कैसे होगी? गरीबी दूर होगी अपना शासन स्थापित करके। इसके लिए हमें एक होकर संघर्ष करना पड़ेगा। **समृद्धि** और शांति लाने के लिए आओ, हम मिलजुल कर कठिन परिश्रम करें।

विशेषः– इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है |

कवि देशवासियों से एकजुट होकर कार्य करने का आह्वान कर रहा हैं। | दृष्टांत अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया गया है।

सारांश

इस कविता के माध्यम से कवि ने देश की निराश, हताश तथा निष्क्रिय जनता का **आह्वान** किया है। कवि देश की जनता में नवीन उत्साह का संचार करके उसे कर्मशील बनाना चाहता है। कवि की इच्छा है कि देश न केवल अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हो, बल्कि मुक्त होकर आगे बढ़े, विकास करे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कवि विभिन्न संप्रदायों, मतों तथा धर्मो आदि के बीच एकता कायम करने की आवश्यकता पर भी बल देता है। यह कविता इन सब बातों की अभिव्यक्ति बहुत ही प्रभावशाली ढंग से करती है। इन सब बातों के साथ यह कविता जिस समय में लिखी गयी थी, उस समय से आगे बढ़कर आज भी हमारा मार्गदर्शन करने में सक्षम है।

जीवन परिचय

मैथिलीशरण गुप्त

जन्मः–

महाकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 1886 में हुआ था। गुप्त जी **चिरगाँव** जिला **झाँसी** उत्तरप्रदेश के प्रतिष्ठित वैश्य परिवार से सम्बंधित थे।

मृत्यु:– राष्ट्रवादी कवि मैथिलीशरण गुप्त जी की मृत्यु दिल्ली में 1964 को हुई थी।

रचनाएँः–

महाकाव्यः– 1. साकेत 2. जय भारत

खण्डकाव्यः– 1. यशोधरा, पंचवटी, सिद्धराज, जयद्रथ–वध

अन्य काव्य ग्रंथः–भारत–भारती, वन–वैभव, पृथ्वीपुत्र

भाषा–शैलीः–

मैथिलीशरण गुप्त की भाषा शुद्ध खड़ी बोली है उनकी भाषा में **भावानुकूल** शब्द **तथा** लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग किया गया है। उनकी भाषा सरल है।

अणु प्रश्न

प्रश्न 1. पुरूषार्थ, परिश्रम और मेहनत से क्या होता है?

प्रश्न 2. प्रगति का शत्रु कौन होता है?

प्रश्न 3. कवि का परिचय कैसी जनता से हुआ?

प्रश्न 4. सफलता पाने के लिए जीवन में क्या करना पड़ता है?

प्रश्न 5. आह्वान कविता के लेखक कौन हैं?

प्रश्न 6. मैथिलीशरण गुप्त का जन्म कब हुआ था?

प्रश्न 7. कवि का परिचय कैसी जनता से हुआ **था** ?

प्रश्न 8. कोई भी कार्य करने के लिए क्या करना पड़ता है?

प्रश्न 9. सभ्यता के विकास के दौर में भारत कैसा था?

प्रश्न 10. भाग्यवादी व्यक्ति कौन होते हैं?

प्रश्न 11. मैथिलीशरण गुप्त कैसे कवि हैं?

प्रश्न 12. हमें किसके भरोसे नहीं बैठना चाहिए ?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जो भाग्य के भरोसे रहता है उसे क्या कहते हैं?
   1. भाग्यहीन
   2. भाग्यवादी
   3. भाग्यशाली
   4. भाग्यवान
2. कवि ने किन्हें पौरूष का पाठ पढ़ने लिए कहा है?
   1. आलसी **लोगों** को
   2. भाग्य का विरोध करने वालों को
   3. आगे बढ़ने वालों को
   4. **ऊँचे** चढ़ रहे **लोगों** को
3. जो लोग कभी पीछे थे वे कैसे आगे बढ़ गए?
   1. भाग्य के सहारे
   2. ईश्वर की कृपा से
   3. साँचे में ढ़लकर
   4. कठिन परिश्रम करके
4. उपमेय कहा जाता है–
   1. जिसकी तुलना की जाए
   2. जिसका आरोप हो
   3. जिससे तुलना की जाए
   4. जो एकरूप हो

लघु एवं दीर्घउत्तरीय प्रश्नः–

प्रश्न 1. भाग्यवादी किसे कहते **हैं** ? क्या मनुष्य को भाग्य के सहारे ही आगे बढ़ना चाहिए ?

प्रश्न 2. पिछड़े देश और समाज भी हमसे आगे निकल गए, आपके विचार से इसका क्या कारण हो सकता

है ?

प्रश्न 3. 'पाठ पौरूष का पढ़ो'- कथन से कवि का क्या आशय है ?

प्रश्न 4. कवि देशवासियों का आह्वान कर उनसे क्या आशा करता है ?

प्रश्न 5. 'विविध सुमनों की एक माला' से क्या तात्पर्य है और यह उदाहरण क्यों दिया गया है ?

प्रश्न 6. कवि देशवासियों को क्या आत्मबोध कराना चाहता है ? क्या देश के प्रति हमारे भी कर्तव्य है? उल्लेख कीजिए |

प्रश्न 7. देश के **विविध धर्मों** संप्रदायों के बीच पारस्परिक एकता का महत्व समझाइए ?

प्रश्न 8. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर उस पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

हिमालय के **आँगन** में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार।

उषा ने **हँस** अभिनंदन किया और पहनाया **हीरक** हार।

जगे हम लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक।

व्योम तम–**पूँज** हुआ सब नष्ट, अखिल **संस्कृति** हो उठी अशोक।

क. भारत का अभिनंदन किसने और **कहाँ** किया?

ख. 'जगे हम' कथन में 'हम' कौन हैं?

ग. किस पंक्ति का आशय है कि भारत ने सारे संसार में ज्ञान का प्रकाश फैलाया।

घ. ज्ञान का प्रकाश फैलने से संसार पर क्या प्रभाव पड़ा?

पाठ - 21 पत्र कैसे लिखें

प्रस्तावना :—आपने अपने जीवन में पत्र **अवश्य** लिखे होगें। जब आप कहीं बाहर गए होंगे, तो अपने दोस्त को चिट्ठी लिखकर वहाँ के बारे में बताया होगा। अपने किसी **रिश्तेदार** को उसकी चिट्ठी का जवाब दिया होगा या अपने जन्मदिन पर बुलाने के लिए अपने दोस्तों को निमन्त्रण–पत्र भेजा होगा या फिर कभी–कभी बिजली पानी की **शिकायत** भी पत्र. लिखकर करनी पड़ी होगी। हो सकता है, आपने कभी